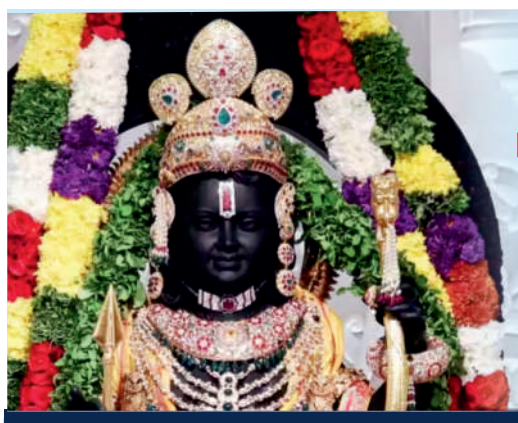

विदर्भ स्वाभिमान

RNI NO. MAHHIN / 2010 /43881

संपादक : सुभाषचंद्र दुबे

प्रबंधक : सौ. विणा एस. दुबे

अमरावती । गुरुवार दि.२५ से ३१ जनवरी २०२४ | विशेषांक | वर्ष १४ । अंक ३१ । पृष्ठ ८ । मूल्य १५ रु. | पोस्टल रजि.नं. ATI/RNP/268/2021-2024

सम्मान और प्रेम ऐसे इत्र हैं जिनका जितना अधिक उपयोग किया जा सके. वह तुम्हारे लिए उतना ही सम्मान और प्रेम अन्यों के दिलों में पैदा करते हैं. जबकि नफरत जिस तरह से बढती है वह दोनों ही पक्षों को सदैव मुसीबत की गर्त में ले जाती है. इसलिए खुश रहे और खुश रखे...

धर्म और राष्ट्रधर्म

धर्म,राष्ट्रधर्म से विकास को लगेंगे पंख, लाखों को रोजगार

अयोध्या में श्रीराम मंदिर का निर्माण जहां करोड़ों लोगों की आस्था से जुड़ा है, वहीं दूसरी ओर धर्म के साथ ही राष्ट्रधर्म का अनुभव सभी देशवासियों ने २२ जनवरी से शुरू किया. श्रीराम मंदिर के निर्माण तथा मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा को लेकर देश में एकता का जो नजारा दिखाई दिया, वह दुर्लभ कहना गलत नहीं होगा. बडनेरा जैसे शहर में दीपावली से भी अपार उत्साह के साथ ही पूरा भारत ही राष्ट्रीयता से ओतप्रोत दिखाई दे रहा था. यह मंदिर लोगों के दिलों के तार जोड़ने के साथ ही भारत के आर्थिक विकास में जहां भूमिका निभाएगा, वहीं दूसरी ओर इसी सप्ताह गणतंत्र की ७५वीं वर्षगांठ भी लोगों के लिए खुशियों को दुगुनी करने वाली साबित हुई. धर्म तो जोड़ता है और तोड़ने का काम करने वाला तो धर्म हो ही नहीं सकता है. प्रभु श्रीराम स्वयं मर्यादा पुरूषोत्तम थे, उन्होंने जीवन में सदैव मर्यादाओं का पालन किया, हर राजनेता के लिए जिस दिन प्रभु श्रीराम आदर्श हो जाएंगे तो उसके बाद तो देश में कभी किसी बात की कमी नहीं होगी. अयोध्या के माध्यम से जिस तरह से देशभर में एकता का सूत्रपात हुआ, वह विलक्षण कहा जा सकता है.

भारत में पहली बार २२ जनवरी से लेकर २७ जनवरी तक धर्म के साथ राष्ट्र धर्म का अनोखा संगम दिखाई दिया.अयोध्या में प्रभु श्रीराम की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर जिस तरह से भारत ही नहीं तो समूचे विश्व में दीपावली से बढ़ कर उत्साह का नजारा था,वह सभी भारतीयों के लिए गौरव के साथ ही गर्व का विषय है.

इतिहास इस बात का गवाह है कि जो व्यक्ति अपनी संस्कृति और संस्कारों से दूर हो जाता है उसकी जड़े कभी मजबूत नहीं होती हैं. प्रभु श्रीराम तो जन-जन तथा सभी के मन में हैं. जहां तक प्रभु श्री राम का सवाल है तो वे भगवान विष्णु के अवतार के साथ ही मानव अवतार में जिस तरह से आदर्श जीवन जीते हुए मानवता की सेवा सबसे बड़ी सेवा का संदेश दिया, वह अपने-आप में बड़ी बात है.लेकिन इसके अलावा मानव रूप में उन्होंने जिस तरह से हर मर्यादा का पालन किया,इसके कारण ही उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम कहा जाता है.आज के दौर में मर्यादाओं का उलंघन जब हर जगह होता दिखाई देता है ऐसे समय बच्चों से लेकर युवाओं तक में अगर प्रभु श्री राम का आचरण अगर पालन वाली भूमिका हो तो भारत में विश्वगुरु बनने की सदैव ताकत थी और आज भी है.अयोध्या जहां हर भारतीय से जुड़ा विषय है वही धर्म के साथ राष्ट्र धर्म को बढ़ावा देने वाला मामला बन जाता है.अयोध्या के मुद्दे पर जिस तरह से देश-विदेश में अपार उत्साह दिखाई पड़ा और भारत की जय जयकार समूचे विश्व में हुई वह निश्चित तौर पर हर भारतीय के लिए गौरव से कम नहीं है. २२ जनवरी से लेकर जिस तरह से अभी तक राम राज्य के नारे और जय जयकार लग रहे हैं,इस माध्यम से राष्ट्रीय एकता जिस तरह से मजबूत हो रही है. वह भी हर भारतीय के लिए गर्व की बात है.कुल मिलाकर धर्म के साथ ही राष्ट्रधर्म का अनुठा संगम जनवरी में दिखाई दिया. अब हर साल गणतंत्रता दिन से पूर्व २२ जनवरी को भी देश में अभूतपूर्व उत्साह का नजारा रहना तय है.

सुभाष दुबे
9423426199

सर्वाधिक लोकप्रिय हिन्दी अखबार विदर्भ स्वाभिमान का सदस्य बनने तथा विशेषांक के लिए संपर्क करें

– सम्पर्क –

9423426199, 8855019189
9420406706

विशेष सहयोग
एवं साज सज्जा
संजय भोपाळे,
8806058697

सम्पादकीय

पूरा विश्व हुआ
श्रीराममय
आस्था का सैलाब

स भारतीय इतिहास में श्रीराम लला प्राण प्रतिष्ठा समारोह को लेकर पूरे भारत में जिस तरह से आस्था का सैलाब और राष्ट्रीयता का नजारा दिखाई दिया,यह अपने आप में किसी भी राष्ट्र के लिए सबसे बड़े गौरव की बात. 22 जनवरी को श्रीराम लला मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा और 26 जनवरी को गणतंत्रता की 75 वीं वर्षगांठ के रूप में धर्म और राष्ट्रधर्म का दोहरा शानदार संयोग एक सप्ताह में आया. दोनों ही देशवासियों में अपार उत्साह के साथ ही आदर्श धर्म भावना पैदा करने में कारगर रहे. अयोध्या में प्रभु श्रीराम का मंदिर बनने की जो आस और विश्वास लोग छोड़ चुके थे ऐसे करोड़ों लोगों के लिए यह मंदिर जहां आस्था और प्रभु में विश्वास का केंद्र बनेगा, वहीं दूसरी ओर भारतीय संस्कृति और मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम के आदर्श विचारों से युवा पीढ़ी को गौरवान्वित करने का काम करेगा.इस माध्यम से भारतीयों का सदियों का संकल्प जहां पूरा हुआ, वहीं दूसरी ओर अमेरिका सहित कई देशों में प्रभु श्रीराम के अयोध्या में अपने घर पर लौट के बाद पूरा विश्व जिस तरह से दीपोत्सव मनाया वह निश्चित ही हर भारतीय के लिए किसी गौरव से कम नहीं है. 22 जनवरी को न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में हर साल इसलिए मनाया जाएगा कि की इस दिन अयोध्या में प्रभु श्रीराम की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की गई थी जिस तरह से पूरा विश्व इस खुशी में शामिल हुआ, वह इस बात का परिचायक है कि प्रभु श्रीराम का नाम ही चमत्कारी है और असंभव को भी संभव करने की ताकत रखता है. सोमवार 22 जनवरी 2024 को 12:29.8 सेकंड से 12:30 मिनट और 32 सेकंड तक प्रभु श्रीराम की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम चला. दो फिट लंबी सोने की छड़ी से प्रभु श्रीराम की मूर्ति के ह्रदय को स्पर्श करते ही मूर्ति में प्राण स्थिर हो गए.श्रीराम के आगमन और उनकी मूर्ति निहारने के बाद करोड़ों भक्तों के आंखों से आनंदाश्रु निकल गए. प्रभु श्रीराम का इससे बड़ा साक्षात्कार और क्या हो सकता है कि अयोध्या में स्थापित मूर्ति को अगर भाव भक्ति से ध्यान से निहारा जाए तो उसके कई रूपों के दर्शन एक साथ होते हैं.प्रभु श्रीराम सर्व व्यापक हैं. भक्ति की ताकत जबरदस्त होती है, इसका अनुभव अयोध्या की घटना के बाद जिस तरह से गली से लेकर दिल्ली तक अपार उत्साह और भक्ति भाव लोगों में देखा गया यह प्रभु श्रीराम की कृपा के बगैर संभव ही नहीं है. इंसान के मन में जब तक भाव नहीं होता है तब तक उसकी कोई भी पूजा प्रभु कभी स्वीकार नहीं करते हैं.प्रभु की पूजा करने के लिए का भाव शुद्ध चाहिए.अयोध्या के इस प्रसंग में जहां पूरे देश को जोड़ दिया, वहीं दूसरी ओर निश्चित तौर पर साधे पास 550 साल से जो इंतजार सभी भारतीय कर रहे थे प्रभु श्रीराम किसी जाति या धर्म के नहीं थे बल्कि संपूर्ण मानवता और सभी तरह के रिश्तों को निभाने का आदर्श स्थापित किया.प्रभु श्रीराम जहां आदर्श राजा थे,आदर्श पुत्र थे, वहीं दूसरी ओर आदर्श दुश्मनी भी निभाने का कार्य प्रभु श्रीराम ने किया.आज पूरा देश गौरव से युक्त है. प्रभु श्रीराम मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा के साथ ही विदर्भ स्वाभिमान प्रभु चरणों में यह कामना करता है कि हमारे भारत में आदर्श रामराज्य की स्थापना हो और हर भारतीय खुश रहे स्वस्थ रहे और जीवन में किसी को भी किसी तरह की तकलीफ ना हो.इस प्रसंग के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्य योगीनाथ के साथ ही श्रीराम तीर्थ क्षेत्र न्यास की भी सराहना की जानी चाहिए, जिन्होंने इस दुर्लभ पाल को समस्त भारतीयों के समक्ष लाया और प्रभु श्रीराम के आदर्श को स्थापित करने के लिए मौका दिया.

हिन्दी साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान यह पत्र मालिक, प्रकाशक, सम्पादक-सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे (पी.आर.बी.कानून के अनुसार सर्वस्वी जवाबदार) ने एस.बी. प्रिन्टर्स, गांधी चौक,जिला अमरावती (महाराष्ट्र)से मुद्रित कर प्रकाशित किया है. मुद्रक-श्री संदीप बागडे,एस.बी. प्रिन्टर्स, गांधी चौक,अमरावती.जिला अमरावती (महाराष्ट्र).प्रकाशन स्थल-साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान, छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती. (महाराष्ट्र).मुख्य प्रबंधक- सौ.वीणा सुभाषचंद्र दुबे, मार्केटिंग हेड श्वेता एस.दुबे (सभी विवाद अमरावती न्यायालय अंतर्गत) आर.एन.आई. रजिस्ट्रेशन नंबर MAHHIN/2010/43881

मोबाइल नं.-09423426199/ 8855019189
E-Mail - vidarbh.swabhiman@gmail.com
www.vidarbhswabhiman.com

क्या आज के सत्ताधारी राम राज्य बना सकते हैं?

राम राज्य अपने आप नहीं आएगा, इसके लिए बड़े पैमाने पर सामाजिक प्रयास करने होंगे. सभी के लिए न्याय चाहिए होगा. लिंग, जाति, समुदायों के बीच समता लानी होगी. सभी के लिए उचित कमाई वाले रोज़गार, अच्छी शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं और माहौल चाहिए होगा. लेकिन सिर्फ राम का आह्वान करने से ये नहीं होगा.

प्रधानमंत्री ने 22 जनवरी, 2024 को कहा था कि 'सदियों की प्रतीक्षा के बाद हमारे राम आ गए हैं.' क्या वो कहीं चले गए थे? क्या वे इसलिए लौटे हैं क्योंकि उनके लिए एक भव्य मंदिर बनाया गया है? क्या राम इसलिए चले गए क्योंकि उनका मंदिर कथित तौर पर बाबर द्वारा ध्वस्त कर दिया गया था? क्या राम को खुश करने के लिए मंदिर का भव्य होना ज़रूरी है या ऐसा हमारे अहं को तुष्ट करने के लिए है कि हम एक भव्य मंदिर बना सकते हैं? क्या मर्यादा पुरूषोत्तम राम इस तरह के आडंबर को स्वीकार करेंगे, जब करोड़ों भारतीय ऐसी परिस्थितियों में जी रहे हैं, जो 'राम राज्य' की किसी भी अवधारणा से कोसों दूर हैं?

'राम राज्य' कौन नहीं चाहता? यह एक राष्ट्रीय लक्ष्य रहा है. मोहनदास करमचंद गांधी ने इसे पाने के लिए एक योजना का प्रस्ताव दिया था. आज का शासक वर्ग फिर इस लक्ष्य को हासिल करने की बात कर रहा है.

इस देरी का कारण 'भगवान श्री राम के अस्तित्व पर दशकों तक जारी कानूनी लड़ाई' को बताया गया है. दरअसल, लड़ाई एक मंदिर की जगह को लेकर थी, न कि राम के प्रति लोगों की आस्था को लेकर. अगर वे विष्णु का अवतार हैं, तो क्या वे हर कण में और इसलिए हर इंसान में नहीं हैं? क्या इंसानों द्वारा किसी मंदिर के विनाश या निर्माण से उनके अस्तित्व और निवास में कोई बदलाव आता है? प्रधानमंत्री ने 'न्यायपालिका के प्रति आभार व्यक्त किया जिसने न्याय की गरिमा को बनाए रखा'. क्या न्यायपालिका सर्वव्यापी राम को वापस ले आई ? इसके अलावा, अगर वे हम सभी में हैं और सर्वव्यापी हैं, तो 'राम राज्य' ख़त्म क्यों समाप्त हो गया?

क्या किसी मंदिर का विध्वंस और निर्माण राजनीतिक उद्देश्य के लिए किया गया इंसानी काम नहीं है? धर्म का इस्तेमाल करके अपनी राजनीति का प्रचार-प्रसार करके अपनी ताकत बनाए रखने के लिए?

राम राज्य की अवधारणा

ऐसा माना जाता है कि राम ने, चाहे अवतार लेकर या एक मानव के तौर पर राजा के रूप में, अपने समय में एक न्यायपूर्ण समाज की स्थापना की थी. 'राम राज्य' की वह अवधारणा क्या थी? जिस देश में उन्हें पूजा जाता है, वहां का समाज उस अवधारणा से कैसे भटक गया? यह केवल सामाजिक गतिशीलता का नतीजा हो सकता है. अगर राम राज्य को पुनर्जीवित करना है तो समाज में परिवर्तन लाना होगा. यदि मंदिरों के अस्तित्व से बदलाव आ सकता है, तो असंख्य विष्णु और राम मंदिर बने हैं, जिनसे ऐसा हो जाना चाहिए था.

राम का समय सरल था- अस्तित्व के लिए केवल कुछ बुनियादी चीजों की जरूरत हुआ करती थी. क्या राष्ट्र उस ओर लौट सकता है? क्या लोग आधुनिक अर्थव्यवस्था में उपभोग के लिए बड़ी संख्या में उपलब्ध उत्पादों को छोड़ने को तैयार होंगे? श्रम के पहले के सरल विभाजन ने ढेरों विशेषज्ञताओं बना दीं, जिसे कोई छोटा देश भी पैदा नहीं कर सकता. इसके अलावा, राम एक राजा थे जबकि आज संसदीय

लोकतंत्र है.

भारतीयों ने वैश्वीकृत दुनिया में वैश्विक प्रभावों को स्वेच्छा से अपनाया है. कुशल भारतीय और युवा बड़ी संख्या में विदेशों में पलायन कर रहे हैं और अमीर भारतीय ऐसे देश में पूंजी बना रहे हैं जहां पूंजी की कमी है. वर्तमान वैश्वीकरण ने भारतीयों को उपभोक्तावादी, आत्मकेंद्रित, विखंडित, लोभी और अनैतिक बना दिया है. इसलिए, शासकों को कमजोरों को अधीन करने और हाशिये पर पड़े लोगों को और ज़्यादा हाशिये पर धकेलने में कोई बुराई नजर नहीं आती. यह सब किसी न्यायपूर्ण समाज या गांधी के 'राम राज्य' के विचार का आधार नहीं हो सकता. क्या राम के प्रति आस्था, सत्ताधारी अभिजात वर्ग की बुनियादी सोच को बदल देगी?

क्या उपभोक्तावाद और जलवायु परिवर्तन के वैश्विक रुझानों के बावजूद सिर्फ भारत में राम राज्य हो सकता है? पहले यह बहस एक देश में साम्यवाद को लेकर हुआ करती थी.

प्रधानमंत्री ने ये कहते हुए कि 'राम आग नहीं है, राम ऊर्जा हैं, ... श्रीराम के रूप में साक्षात भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट विश्वास की भी प्राण प्रतिष्ठा है. ... मानवीय मूल्यों और सर्वोच्च आदर्शों की भी प्राण प्रतिष्ठा है' लोगों से आह्वान किया कि 'श्रीराम का भव्य मंदिर तो बन गया...अब आगे क्या?... हमें आज से अगले एक हजार साल के भारत की नींव रखनी है. ... हमें अपने अंतःकरण को विस्तार देना होगा.... भव्य राम मंदिर साक्षी बनेगा- भारत के उत्कर्ष का, भारत के उदय का, ये भव्य राम मंदिर साक्षी बनेगा- भव्य भारत के अभ्युदय का, विकसित भारत का!'

दूसरे शब्दों में कहें, तो राम राज्य अपने आप नहीं आएगा क्योंकि 'राम व्यापक हैं, विश्व हैं, विश्वात्मा हैं.' इसके लिए बड़े पैमाने पर सामाजिक प्रयास करने होंगे.

अपनी व्यापक अवधारणा में, सभ्य अस्तित्व के लिए सभी के लिए न्याय की जरूरत होगी. लिंग, जाति और समुदायों के बीच समानता पैदा करनी होगी. कम से कम, सभी के लिए उचित कमाई देने वाले रोजगार, सभी के लिए उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं और स्वच्छ वातावरण चाहिए होगा. आज भारत इस आदर्श से भी पीछे हट रहा है.

क्या मर्यादा पुरुषोत्तम कभी देश की मौजूदा स्थिति को स्वीकार करते, जिसमें शासक देश के असंख्य लोगों की दुर्दशा के प्रति उदासीन हैं? सत्तारूढ़ अभिजात वर्ग द्वारा नियंत्रित सरकार इसको बदल सकती है. यदि भव्य आयोजन का कोई प्रभाव पड़ता है, तो यह वहां मौजूद विशिष्ट लोगों पर होना चाहिए था- क्योंकि वे अपने बर्ताव और काम को बदलकर सामाजिक परिवर्तन ला सकते हैं.

जरूरी बदलाव

क्या समारोह में मौजूद रहे बड़े कारोबारी और उनके ढेरों प्रतिनिधि अपनी शोषणकारी प्रकृति को बदल सकते हैं और अपने कारोबार को कुछ ज़्यादा नैतिक बनाने के अपने लालच को कम कर सकते हैं? उनका राजनीतिक नेताओं और पार्टियों पर खासा नियंत्रण है. इसलिए, अपनी काली कमाई रोकने के साथ-साथ वे इसे बढ़ने से रोकने के लिए नेतृत्व को प्रभावित कर सकते हैं. यह नीति की विफलता का सबसे बड़ा कारण है, क्योंकि केवल पैसा खर्च करने से परिणाम नहीं मिलते. यह कर संग्रह को कम कर देता है, जिसके परिणामस्वरूप ऐसी आवश्यक सेवाओं (जैसे शिक्षा और स्वास्थ्य) जिससे अधिक सभ्य और शांतिपूर्ण समाज का बन सकता है, के लिए धन की कमी हो जाती है. वे अपने यहां काम करने वालों को उनके जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए अच्छा जीवन जीने लायक वेतन दे सकते हैं. वे बच्चों को टारगेट करने वाले विज्ञापन बंद कर सकते हैं जो उन्हें उपभोक्तावादी बनाते हैं और कोल्ड ड्रिंक और जंक फूड जैसे उत्पाद बेचना बंद कर सकते हैं जो बच्चों के लिए हानिकारक हैं. वे मुफ़्त शिक्षा के लिए सैकड़ों स्कूल और कॉलेज खोल सकते हैं.

मंदिर समारोह में मनोरंजन जगत की हस्तियां भी बड़ी संख्या में मौजूद रहीं. विज्ञापनों के ज़रिये वे आभूषण, कोल्ड ड्रिंक, जंक फूड, संदिग्ध वित्तीय उत्पादों आदि की बिक्री को बढ़ावा देते हैं. उन्हें बढ़ावा देने से इनकार करके वे उपभोक्तावाद को नुकसान पहुंचा सकते हैं जो सामाजिक और पर्यावरण की दृष्टि से भी मददगार होगा. वे उन फिल्मों में अभिनय करने से भी इनकार कर सकते हैं जो सामाजिक सौहार्द के लिए खतरा पैदा करती हैं या हिंसा को बढ़ावा देती हैं और केवल सामाजिक रूप से संवेदनशील फिल्मों में ही अभिनय कर सकते हैं. वे अपनी सार्वजनिक छवि का इस्तेमाल लोगों को गंभीर सामाजिक मुद्दों और अन्याय पर स्टैंड लेने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए भी कर सकते हैं. उनमें से कई ने दुबई, लंदन, न्यूयॉर्क आदि में महंगी संपत्तियां खरीदी हैं, जो राष्ट्रीय संसाधनों को खत्म करती हैं. क्या वे अपना पैसा वापस ला सकते हैं? इसके अलावा, वे अपनी फिल्मों और विज्ञापनों के लिए ब्लैक मनी स्वीकार करने से भी इनकार कर सकते हैं, चाहे वह भारत में हो या विदेश में.

कार्यक्रम में उपस्थित न्यायपालिका और नौकरशाही के सदस्य मर्यादा पुरुषोत्तम का अनुकरण कर सकते हैं और ऊपर से मिलने वाले आदेशों के आगे झुकने के बजाय नियमों को लागू करने में अपनी स्वतंत्रता को बरकरार रख सकते हैं.

समारोह में उपस्थित रहे नेतागण ईमानदारी से चुनाव लड़ने, काला धन न लेने और जाति और समुदाय वोट बैंक की राजनीति न करने का विकल्प चुन सकते हैं. वे झूठे वादे करना बंद कर सकते हैं, अपनी ट्रोल सेनाओं को भंग कर सकते हैं और अपने विरोधियों के बारे में झूठ फैलाना बंद कर सकते हैं. वे नियमों को मोड़ने के लिए नौकरशाही पर दबाव डालना बंद कर सकते थे. क्या सत्ताधारी राम की इस बात का अनुकरण कर सकते हैं कि कैसे उन्होंने आलोचना का सम्मान किया, और जैसा कि रामचरितमानस में उल्लिखित धोबी प्रकरण से पता चलता है उन्होंने (एक बड़ी व्यक्तिगत कीमत पर भी) अल्पसंख्यकों की राय की परवाह की.

निष्कर्ष

राम राज्य कायम करना भारतीय शासक वर्ग के हाथ में है, लेकिन सिर्फ राम का आह्वान करने से ये नहीं होगा. उन्हें स्वयं से ऊपर उठना होगा. तभी 'अगले एक हजार साल के भारत की नींव' रखी जा सकेगी. तभी 'भव्य राम मंदिर, भव्य भारत, विकसित भारत के उदय का साक्षी बनेगा.' पिछले 75 वर्षों में कई गलत शुरुआतें हुई हैं; इसे मौके को उसमें न बदलने दें.

साभार- द वायर

लेखक- अरुण कुमार

धर्म के साथ अर्थ में भी मजबूत रहेगा श्रीराम मंदिर

अयोध्या के माध्यम से लाखों को मिलेगा रोजगार
सुदर्शन गांग ने कहा-आर्थिक समृद्धि में भी कारगर

विदर्भ स्वाभिमान, २४ जनवरी

अमरावती- भारत में धार्मिकता से लोग ओतप्रोत रहते हैं. यही कारण है कि धार्मिकता के माध्यम से जहां भावनाएं शुद्ध और सात्विक की जाती हैं, वहीं दूसरी ओर इसके माध्यम से रोजगार की अपार संभावना रहती है. तिरूपति बालाजी संस्थान, शेगांव संस्थान,शिर्डी संस्थान के साथ ही हजारों ऐसे धार्मिक स्थल भारत में हैं, जहां के माध्यम से लाखों लोगों को रोजगार मिला है. अयोध्या में श्रीराम लला का दर्शन करने के लिए जिस तरह से लाखों की संख्या में भक्त उमड़ रहे हैं, उससे अयोध्या, उत्तर प्रदेश के साथ ही देश के विकास में भी प्रभु श्रीराम की कृपा बरसने से इंकार नहीं किया जा सकता है. किसी भी तीर्थस्थल पर अगर हजारों लोग आते हैं तो वहां खोमचे की गाड़ी से लेकर होटल, ट्रैवल्स, आटो वालों के साथ ही अनेक लोगों को रोजगार मिलता है. सरकार द्वारा श्रीराम मंदिर के निर्माण के माध्यम से दूरदृष्टि के साथ ही धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने का जो प्रयास किया जा रहा है, वह कुछ साल नहीं बल्कि हजारों साल के लिए कई अवसर उपलब्ध कराएगा.

भारतीय जैन संगठन के वरिष्ठ राष्ट्रीय पदाधिकारी सुदर्शन गांग के मुताबिक भारत में श्रद्धालूओं की संख्या लगातार बढ़ रही है. ऐसे में धार्मिक पर्यटन की प्रगति कम नहीं होने वाली है. अयोध्या तो साक्षात प्रभु श्रीराम की पावन स्थली हैं, यही कारण है कि यहां अभी मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा होने के अगर कुछ सप्ताह में करोड़ों रूपए का कलेक्शन हुआ है और भक्तों की कमी नहीं हो रही है तो निश्चित तौर पर जब मंदिर का काम पूरा हो जाएगा तो अयोध्या नगरी स्वयं के विकास के साथ ही प्रदेश तथा देश के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की बात कही.

विश्वास पर्यटन है

धार्मिक पर्यटन को विश्वास पर्यटन भी कहा जा सकता है. किसी भी शहर में अगर रोज हजारों लोग आते हैं तो चाय, नाश्ते, भोजन से लेकर ठहरने के स्थान तथा गेस्ट हाऊस सहित आने जाने के लिए वाहन की जरूरत सहित अन्य कई सुविधाओं की जरूरत पड़ती है. जीएसटी के माध्यम से करोड़ों रूपए राज्य तथा केन्द्र सरकार की तिजोरी में जाने के बाद जनसुविधाओं के लिए इसका उपयोग किया जा सकता है. चूंकि अयोध्या प्रभु श्रीराम के जन्मस्थल के रूप में पूरे विश्व में पहचाना जाता है, ऐसे में निश्चित तौर पर अभी की स्थिति देखते हुए यहां साल में आने वाले लोगों की संख्या करोड़ों में ही रहने वाली है. एक प्रकार का पर्यटन है, जहां लोग तीर्थयात्रा, मिशनरी, या अवकाश (फैलोशिप) उद्देश्यों के लिए व्यक्तिगत रूप से या समूहों में यात्रा करते हैं. दुनिया में कई ऐसे राष्ट्र हैं, जो छोटे हैं लेकिन पर्यटन को इस कदर बढ़ावा दिया गया है कि उनकी प्रगति का कारण यह पर्यटन उद्योग ही बना है. अयोध्या में जिस तरह सेलोगों की भीड़ आ रही है, उससे आगामी दिनों में श्रीराम की कृपा से अर्थ जगत के महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में अयोध्या की नई पहचान भी जुड़ने से कोई इंकार नहीं कर

सकता है. दुनिया में सबसे बड़ा सामूहिक धार्मिक पर्यटन भारत में कुंभ मेला तीर्थयात्रा में होता है, जो १०० मिलियन से अधिक तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता है. उत्तरी अमेरिकी धार्मिक पर्यटकों में अनुमानित १० बिलियन उद्योग शामिल है. अमरावती के बहिरम मेले, तलेगांव दशासर का शंकरपट सहित नवरात्रि महोत्सव के दौरान करोड़ों रूपए की आय अगर होती है तो अयोध्या की ख्याति तो समूचे विश्व में है, इससे यह कहना गलत नहीं होगा कि प्रभु श्रीराम की कृपा भक्तों पर होने के साथ ही उत्तर प्रदेश के साथ ही देश के अर्थचक्र को और मजबूत बनाने में भी श्रीरामलला की कृपा निश्चित तौर पर बरसेगी.

आधुनिक धार्मिक पर्यटक दुनिया भर के पवित्र शहरों और पवित्र स्थलों की यात्रा करने में सक्षम हैं. धार्मिकता हर जाति,धर्म में हद तक होती है. यही कारण है कि धर्म से जुड़े विश्व के जितने भी शहर हैं, उन्हें आर्थिक दिक्कत कभी नहीं आती है. सुदर्शन गांग के मुताबिक आगामी समय में अयोध्या का दूसरा रूप जो दुनिया के सामने आएगा, वह धार्मिक पर्यटन के महत्व को जहां इंगित करेगा, वहीं धार्मिक पर्यटन किस तरह से विकास, रोजगार देने का माध्यम बनता है, इसका उदाहरण बनने वाला है.

सेवा का धाम है अमरावती का भक्तिधाम

दिलीपभाई पोपट के नेतृत्व में जलाराम सत्संग मंडल का सेवाकार्य

विदर्भ स्वाभिमान, २४ जनवरी

अमरावती- गुजराती समाज व्यवसाय के साथ ही सेवाभाव में भी सदैव अग्रणी रहता है. इसका नमूना अमरावती की शान बडनेरा रोड का भक्तीधाम मंदिर है. मंदिर में जहां धर्म का काम होता है, वहीं दूसरी ओर रोज अन्नदान, गौसेवा के साथ ही विभिन्न सामाजिक उपक्रमों में शहर के सुख्यात श्रीराम मंदिरों में से एक बडनेरा रोड स्थित भक्तिधाम मंदिर न केवल जिले बल्कि समूचे विदर्भ में सुख्यात है.

इस मंदिर की स्थापना १९७५ में की गई थी. गुजराती समाज द्वारा श्रीराम मंदिर के निर्माण के साथ यहां प्रभु श्रीराम दरबार में श्रीराम, जानकी, लक्ष्मण के साथ ही प्रभु का आशिर्वाद लेते संकटमोचन हनुमानजी की मूर्ति और इसके करीब मानव सेवी संत जलाराम बाप्पा की पूर्णाकार मूर्ति भक्तों की मनोकामनाओं को पूरा करती है.

भक्तिभाव के साथ ही भक्तिधाम श्रीराम मंदिर द्वारा मानव सेवा को बढ़ावा दिया जाता है.यहां साल भर गरीबों और जरूरतमंदों के लिए अन्नदान, रामरोटी, गौसेवा के साथ ही श्रीराम कथा जैसे कार्यक्रम चलते रहते हैं. मंदिर की स्थापना

के बाद से अन्नदान का कार्य निरंतर जारी है. बडनेरा रोड स्थित भक्तिधाम मंदिर में वर्षों से चलने वाला सेवाभाव किसी को भी प्रभावित किए नहीं रहता है. यहां जहां भारतीय संस्कृति, संस्कारों को बढ़ावा दिया जाता है, वहीं दूसरी ओर रोज अन्नदान, गुरूवार को महाप्रसाद, रविवार को संगीतमय रामधुन में सैकड़ों की संख्या में भाविक शामिल होते हैं.

जलाराम सत्संग मंडल के अध्यक्ष दिलीपभाई पोपट के नेतृत्व में मंडल के सभी पदाधिकारी यद्यपि व्यस्त उद्यमी हैं लेकिन संत जलाराम बाप्पा के भी अनन्य भक्त रहने के कारण अन्नदान सेवा में स्वयं उपस्थित रह कर सेवा देने में संकोच नहीं करते हैं. सुबह एवं शाम की आरती में जहां सैकड़ों भाविक सहभागी होते हैं, वहीं अन्नदान के कार्यक्रम में सेवा देने के लिए भी सदैव तत्पर रहते हैं. भक्तिभाव के साथ ही मानव सेवा का यह सिलसिला कई वर्षों से चल रहा है.

अभिनंदन अर्बन को-ऑप. बँक लि.
मुख्य कार्यालय : प्रभात चौक, अमरावती

वरुड शाखा शुभारंभ

कार्यक्रम वेळ : शुक्रवार दि.९फेब्रुवारी २०२४ । सकाळी ११. वाजता
कार्यक्रम स्थळ : श्री अष्टविनायक सभागृह, पोलिस स्टेशन जवळ, अप्रोच रोड, वरुड

- उद्घाटक -
मा.ना.श्री. दिलीप वळसे पाटील
सहकार मंत्री, महाराष्ट्र राज्य

- मुख्य अतिथी -
मा.श्री.के.के. तातेड
माजी न्यायाधीश, मुंबई उच्च न्यायालय व अध्यक्ष महाराष्ट्र राज्य मानवी हक्क आयोग, मुंबई

मा.डॉ. अनिलजी बोंडे, खासदार, राज्यसभा | मा.देवेंद्रजी भुयार, आमदार | मा.सौ. सुलभाताई खोडके, आमदार | डॉ. राजेंद्रजी शिंगणे, आमदार

- विशेष अतिथी -
मा.श्री. अनिलजी कवडे IAS
सहकार आयुक्त तथा निबंधक, सहकारी संस्था, म.रा.
मा.श्री. विशाल आनंद IPS
पोलिस अधिक्षक, अमरावती ग्रामीण

- कार्यक्रमाचे अध्यक्ष -
मा.ॲड. विजय बोथरा
अध्यक्ष, अभिनंदन अर्बन को-ऑप. बँक लि.

सतत ऑडिट वर्ग 'अ' असलेली विदर्भातील अग्रगण्य बँक
उत्कृष्ट कामकाजाचा महाराष्ट्र शासन द्वारा "सहकार निष्ठ" व "सहकार भुषण" पुरस्कार प्राप्त

दि. 31/12/2023 ची सांपत्तिक स्थिती (आकडे करोड मध्ये)

भागभांडवल	5.32 करोड	सी.डी. रेशो	61.72 %
राखीव व इतर निधी	39.46 करोड	नफा	5.37 करोड
ठेवी	322.15 करोड	CRAR	22.63 %
कर्जे	198.86 करोड	ग्रॉस एन.पी.ए.	0.57 %
व्यवसाय	521.01 करोड	नेट एन.पी.ए.	0 %

Abhinandan Silver Jubli Loan for MSME R.I.- 9.90%

शाखा : १) मुख्य शाखा : प्रभात चौक, अमरावती २) परतवाडा शाखा : सदर बाजार, परतवाडा ३) बडनेरा शाखा : जयहिंद चौक, बडनेरा ४) न्यू कॉटन मार्केट रोड शाखा : शेगांव नाका, अम. ५) अचलपूर शाखा : नगर परिषद हॉल, अचलपूर ६) चांदुर बाजार शाखा : बेलोरा चौक, चांदुर बाजार ७) शामणगांव शाखा : गांधी चौक, शामण. रेल्वे ८) नागपुर शाखा : इतवारी, नागपुर

बँकेची स्वःमालकीची ईमारत 'अभिनंदन हाईटस', कॅम्प, अमरावती येथे लवकरच सुरु होत आहे.

बँकेची ठळक वैशिष्ट्ये
UPI, ATM, e-COM, POS, IMPS- Dr/Cr, Mobile Banking, BBPS, 7/12 & SMS Miss Call सुविधा
* सतत विदर्भ, राज्य व राष्ट्रीय स्तरावर पुरस्काराने सन्मानित
* अंकेक्षणात सतत 'अ' वर्ग
* NEFT/ RTGS सुविधा
* आकर्षक व सुरक्षित लॉकर्स व्यवस्था
* अल्प व्याजदरावर सुलभ कर्ज वितरण
* Fastag सुविधा
* ईलेक्ट्रीक बिल भरणा सुविधा
* सर्व शाखामध्ये Pan Card सुविधा
* फ्रँकिंग द्वारा शासकीय मुद्रांक विक्री
* सर्व शाखांमध्ये CTS क्लीअरींग सुविधा
* ठेवीवर आकर्षक व्याज
* Sarvatra Card Safe सुविधा

- आपले स्नेहांकित -
शिवाजी देठे, मुख्य कार्यकारी अधिकारी
डॉ.सुरेंद्र बरडिया, उपाध्यक्ष
सुदर्शन गांग, संचालक व अध्यक्ष व्यवस्थापन मंडळ
हुकमचंद डागा, संस्थापक

-व्यवस्थापन मंडळ-
अध्यक्ष
सुदर्शन गांग
सदस्य
ॲड. विजय बोथरा
हुकमचंद डागा
ॲड. भारतप्रकाश खजांची
श्रेणिक बोथरा (सी.ए.)
शितलकुमार लुनावत
शिवाजी देठे, मुख्यकार्यकारी अधिकारी
अनिल उगले, उप मुख्य कार्यकारी अधिकारी

- संचालक मंडळ -
हुकमचंद डागा, संस्थापक | ॲड. विजय बोथरा, अध्यक्ष | डॉ.सुरेंद्र बरडिया, उपाध्यक्ष

- संचालक -
सुदर्शन गांग, कंवरीलाल ओस्तवाल, राजेन्द्रकुमार सिंघई (जैन)
राजेंद्र भंसाली, किशोर बोकरिया, ॲड. गौरव लुनावत,
नवीन कुमार चोरडीया, अरुण कडू, सुनिल सरोदे,
शंकर शिंदे, सौ. सरला भंसाली, श्रीमती किरण जैन

श्रीराम के रंग में रंग गया था झिरी का श्रीराम मंदिर

१०० साल का है इतिहास, उमड़े थे भक्त

विदर्भ स्वाभिमान, २४ जनवरी

अमरावती-शहर से कुछ ही दूरी पर स्थित बडनेरा-यवतमाल मुख्य मार्ग पर स्थित झिरी श्रीराम मंदिर जहां जागृत मंदिर है, वहीं दूसरी ओर सोमवार २२ जनवरी को इस मंदिर में सुबह से लेकर रात तक विभिन्न कार्यक्रम हुए. इसमेंसैकड़ों की संख्या में भक्तों ने उपस्थिति जताई. मंदिर के संचालक चंदूलाल सिंघानिया, पवन सिंघानिया के साथ ही मंदिर प्रबंधन के सभी ट्रस्टियों द्वारा योगदान दिया गया. सैकड़ों भक्तों ने महाप्रसाद का भी लाभ लिया. २२ जनवरी को अयोध्या में श्रीराम लला मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा को लेकर हुए विभिन्न कार्यक्रमों में भक्तों का उत्साह देखने लायक था. श्रीराम मंदिर में प्राचीन बालाजी हनुमानजी की मूर्ति के दर्शन के साथ ही श्रीराम दरबार का दर्शन करने लोगों की भीड़ लगती है. धार्मिक के साथ ही सामाजिक कामों में अग्रणी चंदूलाल सिंघानिया द्वारा यहां पर श्रीराम के साथ ही श्री श्यामबाबा मंदिर का कार्य तेजी से किया जा रहा है. इसके कारण बडनेरा ही नहीं तो समस्त जिले के श्रीराम और श्री श्यामबाबा भक्तों को इस मंदिर में दोहरा पुण्यलाभ प्राप्त करने का मौका मिलेगा. जयपुर में श्री श्यामबाबा की मूर्ति तैयार हो रही है. इस मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा के लिए चार दिवसीय विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन किया गया है. बडनेरा से यवतमाल जाने वाले मार्ग पर झिरी श्रीराम मंदिर में श्री श्यामबाबा मंदिर का निर्माण तेजी से किया जा रहा है. मंदिर ट्रस्ट के कर्ता-धर्ता चंदूलाल सिंघानिया, पवन सिंघानिया के साथ ही ट्रस्ट जहां मंदिर ट्रस्ट के सभी पदाधिकारी और सेवाधारी इसको लेकर उत्साहित हैं, वहीं दूसरी ओर श्री श्याम बाबा मंदिर के साथ ही १०-१२

एकड़ क्षेत्र में फैला यह पूरा क्षेत्र धार्मिकता से ओतप्रोत रहने के साथ ही पर्यावरण सुंदरता से भी लैस है. यहां आने वाले भक्तों का मन मोह लेता है. यहां पर श्यामबाबा मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को लेकर नियोजन किया जा रहा है.१० फरवरी से पूजा-अर्चना शुरू होकर १४ को मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की जाएगी. एक ही स्थान पर श्रीराम और श्रीश्याम के दर्शन का सौभाग्य प्रदान करने वाला यह जिले का दूसरा मंदिर होगा. इससे पहले विदर्भ में सुख्यात सतीधाम मंदिर में एक ही स्थान पर श्रीराम दरबार और श्री श्याम दरबार है, जहां साल भर निरंतर विभिन्न कार्यक्रम होते हैं.

झिरी स्थित श्रीराम मंदिर तीसरी पीढ़ी द्वारा संचालित किया जा रहा है. चंदूलाल सिंघानिया ने बताया कि उनके पिता रामेश्वर सिंघानिया प्रभु श्रीराम के अनन्य भक्त थे. उन्होंने मंदिर की स्थापना की थी. मंदिर जागृत रहने के साथ ही १०-१२ एकड़ क्षेत्र में फैला है. पहले यहां बालाजी हनुमानजी की मूर्ति थी, पश्चात श्रीराम दरबार की मूर्तियां स्थापित की गई. भक्तों की मन्नतें जहां तैयार श्रीराम मंदिर में पूरी होती हैं, वहीं न केवल बडनेरा बल्कि यह मंदिर जिले तथा विदर्भ में सुख्यात है. मंदिर की साफ-सफाई से लेकर पूजा-अर्चना और आरती तथा प्रसाद वितरण में स्वयं चंदूलाल सिंघानिया टीम के साथ प्रयासरत रहते हैं. उन्होंने बताया कि न केवल जिले बल्कि विदर्भ से भक्त यहां पर आते हैं.

श्रीराम भक्त कैलाशचंद्र जोशी, राम को पहुंचाया घर-घर

धार्मिक के साथ सामाजिक कामों में रहते हैं सदैव अग्रणी

सोमवार का दिन सभी के लिए यादगार रहेगा. इस दिन जहां-जहां भी श्रीराम के भक्त रहते हैं, उन सभी के लिए यह तारीख अत्याधिक महत्वपूर्ण तारीख हो गई है. इस दिन हर व्यक्ति ने अपना योगदान दिया. इन्वेस्टमें ट विशेषज्ञ और श्रीराम भक्त कैलाशचंद्र जोशी ने बडनेरा में इस दिन हर भक्त के घर पर श्रीरामजी की फोटो सुबह से ही पहुंचाना शुरू किया. अपने घर पर श्रीराम को आया देखकर सभी भक्तों का उत्साह देखने लायक था. उनकी इस पहल की सभी ने सराहना की. वे आठवड़ी बाजार के साथ ही झिरी स्थित श्रीराम मंदिर में भी सदैव सेवा देने का काम करते हैं.

कहते हैं कि प्रभु धन-दौलत नहीं बल्कि भाव के भूखे होते हैं. इसी पर अमल करते हुए प्रभु श्रीराम के अनन्य भक्त, बडनेरा निवासी और धार्मिक कार्यों में अग्रणी रहने वाले कैलाशचंद्र मदनलाल जोशी द्वारा सोमवार को घर-घर पहुंचे राम, हर घर पहुंचे राम की संकल्पना को साकार किया जा रहा है. इस कड़ी में वे हर घर में सुबह ही प्रभु श्रीराम दरबार की फोटो पहुंचाने वाले हैं.

कैलाशचंद्र जोशी के मुताबिक उनके जीवन का यह स्वर्णिम पल है जब प्रभु श्रीराम लला की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा अयोध्या में होने के साथ ही पूरा देश श्रीराम के गुणगान में मगन है. श्रीराम आदर्श हैं सभी भारतीयों के. अब जब यह सुंदर पल आया है तो वे भी अपनी ओर से कमी नहीं होने देना चाहते हैं. पूरा बडनेरा क्षेत्र श्रीराम मय हो गया है. उनके मुताबिक यह पल सभी भारतीयों के लिए गौरव का क्षण है. इसको ध्यान में रखते हुए उन्होंने यह कल्पना की. इसके लिए बडनेरा में सुबह से ही चार युवाओं की टीम बनाई है और युवाओं की यह टीम सुबह से ही श्रीराम भक्तों के घर में जाकर श्रीराम दरबार फोटो का वितरण करेंगे. उन्होंने इससे पूर्व बडनेरा में श्रीराम कथा, शिव पुराण, भागवत कथा, श्यामबाबा भजन संध्या के साथ ही विभिन्न कार्यक्रम लेते रहे हैं. श्रीराम के आदर्श विचार पर सभी देशवासियों के अमल करने पर निश्चित ही पूरा देश तरक्की के नए आयाम स्थापित करेगा. बडनेरा के आठवड़ी बाजार के साथ ही झिरी श्रीराम मंदिर में भक्तों का सुबह से लेकर सोमवार को रात तक तांता लगा रहा. महाप्रसाद का दोनों ही स्थानों पर हजारों भक्तों ने लाभ लिया.

अभिनंदन बैंक की ९वीं शाखा वरूड़ शाखा का शुभारंभ ९ को

सहकार मंत्री दिलीप वलसे पाटील होंगे प्रमुख अतिथि

विदर्भ स्वाभिमान, २४ जनवरी

अमरावती- सहकारिता क्षेत्र में अपनी विश्वसनीयता के साथ अपडेट रहने और ग्राहकों को अधिकाधिक सुविधाएं देने, पारदर्शी कार्यप्रणाली के कारण लाखों ग्राहकों का विश्वास जीतने वाली अभिनंदन अर्बन को-ऑपरेटिव बैंक की ९वीं शाखा का शुभारंभ वरूड में होने जा रहा है.

स्थापना के रजत वर्ष में बैंक द्वारा हासिल की गई शानदार प्रगति जहां सराहनीय है, वहीं बैंक की भव्य इमारत भी तैयार हो गई है. कुछ ही समय में अपार लोकप्रियता तथा विश्वास अर्जित करने वाली अभिनंदन अर्बन को-ऑपरेटिव बैंक लिमिटेड वरूड शाखा का शुभारंभ राज्य के सहकार मंत्री दिलीप वलसे पाटील के हाथों हो रहा है.

इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में मुंबई उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायमूर्ति के.के. तातेड,अमरावती के राज्यसभा सदस्य डॉ. अनिल बोंडे, मोर्शी के विधायक देवेंद्र भुयार,अमरावती की विधायक सौ. सुलभाताई खोड़के,डॉ. राजेंद्र पाटणी रहेंगे. इस मौके पर विशेष अतिथि के रूप में सहकार आयुक्त

अनिल कवडे, अमरावती जिला ग्रामीण पुलिस अधीक्षक विशाल आनंद उपस्थित रहेंगे. कार्यक्रम की अध्यक्षता बैंक के अध्यक्ष और जाने-माने आयकर वकील एड.विजय बोथरा करेंगे. कार्यक्रम श्री अष्टविनायक सभागृह पुलिस थाने के करीब वरूड में होने जा रहा है.

सहकार से समृद्धि का घोषवाक्य रखने वाली अभिनंदन अर्बन बैंक की फिलहाल अमरावती शहर में ३ सहित कुल ८ शाखाएं बेहतरीन ढंग से ग्राहकों की सेवा कर रही हैं. पारदर्शी कार्यप्रणाली के चलते बैंक को अभी तक राज्य से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक कई पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं. बैंक के अध्यक्ष एड. विजय बोथरा तथा व्यवस्थापन मंडल के अध्यक्ष सुदर्शन गांग के मार्गदर्शन में बैंक के सभी संचालक और अधिकारी एवं कर्मचारियों के संयुक्त प्रयासों से बैंक ने अभी तक शानदार प्रगति की है. वरूड शाखा का शुभारंभ ९ फरवरी को सुबह ११:०० बजे होने जा रहा है.मौके पर सभी संबंधितों से उपस्थित रहने का आग्रह संस्थापक हुकुमचंद डागा,अध्यक्ष एड.विजय बोथरा,उपाध्यक्ष डॉ. सुरेंद्र बरडिया, संचालक सुदर्शन गांग, कवरीलाल ओस्तवाल,राजेंद्र भंसाली, किशोर बोकरिया, एड. गौरव लुणावत, नवीन कुमार चौरडिया, अरुण कडू, सुनील सरोदे,शंकर शिंदे, सौ. सरला भंसाली, सौ. किरण जैन, व्यवस्थापन मंडल के अध्यक्ष सुदर्शन गांग, बैंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी शिवाजी देठे, उपमुख्य कार्यकारी अधिकारी अनिल उगले सहित सभी सदस्यों ने किया है. बैंक की उत्तरोत्तर प्रगति की विदर्भ स्वाभिमान परिवार कामना करता है. शाखा शुभारंभ पर हमारी हार्दिक शुभकामनाएं.

प्राचीनतम श्री रामदेवबाबा मंदिर का राम दरबार

श्वेता दुबे/ विदर्भ स्वाभिमान

अंबानगरी का धार्मिक इतिहास रहा है. यहां धार्मिकता सदैव भरपूर रही है और कई मंदिर तो शहर की शान कहे जा सकते हैं, ऐसे ही मंदिरों में प्रभात चौक स्थिति प्राचीनतम श्रीरामदेवबाबा मंदिर है. इस मंदिर का श्रीराम दरबार भी उतना ही प्राचीन है. यहां साल भर विभिन्न कार्यक्रम होते हैं. शहर के मध्य और हजारों भक्तों के श्रद्धास्थल के रूप में श्री रामदेवबाबा प्राचीन मंदिर को पहचाना जाता है. इस मंदिर में श्रीराम दरबार का इतिहास २०० साल पुराना है. मंदिर में नित्य ज्योति,

आरती तथा साल में माघ और भादवा मेला जय बाबारी मित्र परिवार, रामदेवजी महाराज संस्था द्वारा आयोजित किया जाता है. अयोध्या में श्रीरामलला मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा को लेकर मंदिर द्वारा भी मंदिर को सजाया गया था. इतना ही नहीं तो सोमवार को सुबह से लेकर रात तक विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम हुए. इसमें सैकड़ों भक्तों ने भाग लिया.

इस प्राचीन मंदिर में राम दरबार, श्रीरामदेवबाबा की समाधि, शिव दरबार, बाहुबली और परचा बावडी है. २२ जनवरी को अवध में प्रभु श्रीराम की प्राणप्रतिष्ठा पर मंदिर को सजाया जाएगा. सोमवार को सुबह से गुब्बारे, फूलों और रोशनाई से मंदिर को सजाया गया था.शाम ७ से १० बजे तक संगीतमय सुंदरकांड होगा.नागपुर के पंडित राजेन्द्र शर्मा की टीम ने संगीतमय सुंदरकांड प्रस्तुत कर भक्तों को भावविभोर कर दिया.कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए रामदेवबाबा प्राचीन मंदिर, प्रभात चौक अमरावती भक्त परिवार ने अथक प्रयास किया. मंदिर में आकर्षक रोशनाई तथा कार्यक्रम के बेहतरीन आयोजन की सभी द्वारा सराहना की जा रही है.

विश्वस्तरीय जीआरडीसी ने पूरी की 22 साल की सेवा

25 साल में 25 राष्ट्रीय कान्फ्रेंस, सेमिनार में सहभागी होनेवाले विदर्भ के एकमात्र रेडियोलॉजिस्ट, सेवा में अग्रणी

अमरावती- क्षेत्र में स्वयं को अपडेट करने वाले और विश्वस्तरीय मशीनरी और सुविधाओं के साथ अचूक स्वास्थ्य जांच के लिए न केवल अमरावती बल्कि समूचे विदर्भ में सुख्यात घुंडियाल रेडियोडायग्नोस्टिक सेंटर (जीआरडीसी) ने स्थापना के २२ साल की बेहतरीन सेवा पूरी की है . इसके संचालक डॉ. पंकज घुंडियाल जाने-माने रेडियोलॉजिस्ट रहने के साथ ही विदर्भ के एकमात्र ऐसे डाक्टर हैं, जिन्होंने २५ साल की सेवा के दौरान इस विषय की २५ संगोष्ठी और सीमनारों , कार्यशालाओं में भाग लेते हुए स्वयं को अपडेट किया है.

केन्द्र ने जहां अंबानगरी का नाम राष्ट्रीय स्तर पर चमकाया है, वहीं गरीबों, जरूरतमंदों की मदद के मामले में सदैव अग्रणी रहा है. स्वयं डॉ. घुंडियाल कहते हैं कि लोगों की दुवाओं के कारण ही आज यह केन्द्र विश्वस्तरीय और विश्वसनीय दोनों ही बना है.

घुंडियाल रेडियोडायग्नोसिस सेंटर ने स्थापना और मरीज सेवा के २२ साल २ फरवरी को पूरे किए. इस दौरान कई उतार-चढ़ाव जहां आए, वहीं नैतिकता और सच्चाई का दाम थामे रखने वाले डॉ. पंकज घुंडियाल ने कभी भी शहर के सम्मान को कम नहीं होने दिया. समय के साथ केन्द्र ने जहां स्वयं को अपडेट किया, वहीं डॉ. घुंडियाल नित-नई मशीनरी और खोज को बढ़ावा देते रहे हैं. यह ऐसा केन्द्र है, जिसमें आधुनिकतम और न्यू ब्रैंड जांच मशीने हैं, जो अचूक जांच करती हैं. कोरोना महामारी के दौरान हजारों मरीजों को बचाने का काम केन्द्र द्वारा करने को वे अपनी सबसे बड़ी कामयाबी मानते हैं. ब्लैक रूम वाली एक्सरे मशीन से लेकर आधुनिकतम एमआरआई मशीन से केन्द्र जहां लैस है, वहीं विश्वस्तरीय मल्टीपल जांच मशीन १.५ टेस्ला एमआरआई उसकी शान हैं.यह न केवल अमरावती बल्कि समूचे संभाग की शान कहना गलत नहीं होगा. बेहतरीन जांच सुविधाओं के मामले में विश्वस्तरीय स्थान हासिल करने वाले घुंडियाल रेडियो डायग्नोस्टिक सेंटर (जीआरडीसी) ने मरीज सेवा के साथ मरीजों का विश्वास और अचूक जांच का सम्मान प्राप्त किया है. विजयवाड़ा में हुए सम्मान और यहां पर देशभर से जमा हुए विशेषज्ञों के साथ विचारों के आदान-प्रदान को वे अपने लिए गौरव मानते हैं.

डॉ.घुंडियाल का जीवन सफर कम संघर्षमय नहीं रहा है. १५ हजार रूपए की नौकरी से लेकर तो अमरावतीवासियों के लिए सदैव कुछ हटकर करने का जज्बा रहा. यही कारण है कि आज आधुनिकतम जांच सुविधाओं के मामले में घुंडियाल रेडियो डायग्नोस्टिक सेंटर (जीआरडीसी) सबसे आगे है. विश्वस्तरीय जांच मशीनों के साथ ही विशेषज्ञों की टीम चौबीसों घंटे मरीजों की जांच में लगी रहती है. ३ फरवरी २००२ से आरंभ इस केन्द्र ने २१ वर्षों की सेवा के दौरान कई उतार-चढ़ाव भी देखे हैं लेकिन लक्ष्य सदैव मरीजों की भलाई, सटीक जांच का ही रहा है. डॉ. पंकज घुंडियाल मानवता,सेवाभाव को प्रोत्साहित करने वाले व्यक्ति रहने से केन्द्र को भी सामाजिक रूप देने के प्रयास में कभी पीछे नहीं रहे.

महाराष्ट्र ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय एवं विश्वस्तरीय आधुनिकतम वैद्यकीय जांच मशीनों से लैस घुंडियाल रेडियो डायग्नोस्टिक सेंटर (जीआरडीसी) का घोष वाक्य ही-हम करते है परफेक्ट डायग्नोसिस इसलिए मरीजों पर समुचित दिशा में उत्तम इलाज (व्ही सर्व यू द परफेक्ट डायग्नोसिस), सो यु ट्रेट युअर पैटेंन्ट्स द बेस्ट). इसी घोषवाक्य को उद्देश्य मानकर मरीजों की बेहतरी के लिए स्थापना से लेकर अभी तक प्रयास किया जाता रहा है. काम्प्रेहेंसिव एन्ड एडवान्स द रेडियो डायग्नोसिस विथ कम्प्लींट केअर के तहत जांच की सभी सुविधाएं यहां एक ही छत के निचे मिलने की जानकारी भी डा. पंकज घुंडियाल ने दी. डॉ. पंकज घुंडियाल के मुताबिक मुंबई में उन्हें अपार संभावना थी लेकिन क्योंकि अमरावती उनकी जन्मभूमि है. इसलिए उन्होंने अपनी जन्मभूमी को ही कर्मभूमि बनाते हुए अपनी वैद्यकीय कुशलता का लाभ अमरावती जिले की जनता को देने के लिए यहां पर यह केंद्र शुरु किया. उनके मुताबिक वर्ष २००२ से मरीजों की सेवा में लगा यह केंद्र आज जिले के डाक्टरों के साथ ही मरीजों के विश्वास का केंद्र बन गया है.

पहली जांच मशीन लाई

हर प्रकार की जांच करने में सक्षम एवं जर्मनी द्वारा निर्मित सायमन्स हाईली एडवांस सायलेंट १.५ टेस्ला ९६ चैनल मैगनेटम सेंप्रा एमआरआय मशीन्स इस केंद्र में आई है. यह मशीन समूचे भारत में कहीं भी नहीं थी. आज केन्द्र में हर बीमारी की अचूक जांच होना शहर ही नहीं बल्की संभाग की जनता के लिए इस केन्द्र के रूप में वरदान से कम नहीं है.

इस अकेली मशीन में हर प्रकार की शारीरिक जांच करने की एक्युरेट क्षमता है. इसके चलते यह मशीन न केवल केंद्र बल्कि अमरावती जिले ही नहीं तो विदर्भ के लिए वैद्यकीय क्षेत्र की क्रांति कहीं जाए तो गलत नहीं होगा. आधुनिकतम वैद्यकीय जांच सुविधाओं से लैस इस मशीन से जांच कुछ ही मिनट में हो जाती है. इसमें न्युरोशुट, एन्जीओशुट, आर्थोशुट, बॉडीशुट, ओंकोशुट, कार्डियाकशूट, पीडीयाट्रीक शूट, क्वाईट शूट जैसी आधुनिकतम सुविधा के माध्यम से मरीजों की सटीक जांच की क्षमता एवं व्यवस्था है.

सभी का आभारी रहूंगा

डॉ. पंकज घुंडियाल ने २२ साल से मरीजों, डाक्टरों के साथ ही सभी वरिष्ठों द्वारा जताए गए विश्वास के लिए कृतज्ञता जताते हुए सभी का आभार माना. साथ ही भविष्य में यही अमूल्य प्रेम, अपनापन और साथ मिलने का भरोसा भी जताया. अंत में सभी के ज़ीवन में माता-पिता का आशिर्वाद, मरीजों का विश्वास और सभी के सहयोग के कारण यह कामयाबी मिली है. मरीजों का संतोष मुझे अपार खुशी देता है. मुझे विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश में ७६वें राष्ट्रीय आईआरआईए सम्मेलन में भाग लेने का सम्मान मिला.जब से मैंने अमरावती में अपना रेडियोडायग्नोस्टिक जांच केन्द्र शुरू किया है (१९९९ से २०२४ तक) तब से मैं संकाय, प्रतिनिधि, आयोजक, क्विज़ मास्टर और कई अन्य पदों पर रहते हुए लगभग सभी २५ राष्ट्रीय स्तर के आईआरआईए सम्मेलनों में भाग लेने के लिए बेहद भाग्यशाली, आभारी और गौरवान्वित महसूस करता हूं. विदर्भ का मैं यह सौभाग्य प्राप्त करने वाला एकमात्र डाक्टर हूं.

आंध्र प्रदेश रेडियोलॉजिस्ट एसोसिएशन को उनके शानदार और त्रुटिहीन संगठन के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद और बधाई. सम्मेलन वास्तव में प्रेरणादायक और सीखने का एक अविश्वसनीय अनुभव था.मैं नई पीढ़ी के एमआरआई स्कैन, मल्टीस्लाइस स्टीन और कार्डियाक सिटी स्कैन, ४डी/५डी सोनोग्राफी और कलर डॉपलर, डिजिटल एक्स-रे में प्रगति, ओपीजी और मैमोग्राफी मशीनों और सबसे महत्वपूर्ण, एआई के बारे में व्यापक ज्ञान प्राप्त करने के अवसर के लिए पूरी तरह से प्रबुद्ध और आभारी हूं. हमारे अत्याधिक उन्नत रेडियोडायग्नोस्टिक क्षेत्र के प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय संकायों द्वारा अद्भुत कार्यशालाओं और वार्ताओं के माध्यम से अन्य दिलचस्प विषयों के बीच रेडियोलॉजी के क्षेत्र में क्रांति हुई है और मुझे इस बात का हर्ष है कि समय के साथ मैं सेमिनारों, कान्फ्रेंसों के माध्यम से स्वयं को अपडेट करते हुए इसका लाभ मरीजों को दे पा रहा हूं और उनका विश्वास भी सदैव बढ़ता रहा है. सम्मानित शिक्षकों, वरिष्ठों, साथी रेडियोलॉजिस्ट और कई पुराने और नए दोस्तों के साथ यह एक सुखद और यादगार समय था. मैं चेन्नई में अगले आईआरआईए सम्मेलन का उत्सुकता से इंतजार कर रहा हूं. सभी के साथ और विश्वास के लिए आभारी रहूंगा.सहयोग के लिए दिल से शुक्रिया अदा किया.

सौभाग्यशाली हूं जो मिला अपडेट होने का मौका

ज़ीवन में माता-पिता का आशिर्वाद, मरीजों का विश्वास और सभी के सहयोग के कारण यह कामयाबी मिली है. मरीजों का संतोष मुझे अपार खुशी देता है. मुझे विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश में ७६वें राष्ट्रीय आईआरआईए सम्मेलन में भाग लेने का सम्मान मिला.जब से मैंने अमरावती में अपना रेडियोडायग्नोस्टिक जांच केन्द्र शुरू किया है (१९९९ से २०२४ तक) तब से मैं संकाय, प्रतिनिधि, आयोजक, क्विज़ मास्टर और कई अन्य पदों पर रहते हुए लगभग सभी २५ राष्ट्रीय स्तर के आईआरआईए सम्मेलनों में भाग लेने के लिए बेहद भाग्यशाली, आभारी और गौरवान्वित महसूस करता हूं. विदर्भ का मैं यह सौभाग्य प्राप्त करने वाला एकमात्र डाक्टर हूं. आंध्र प्रदेश रेडियोलॉजिस्ट एसोसिएशन को उनके शानदार और त्रुटिहीन संगठन के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद और बधाई. सम्मेलन वास्तव में प्रेरणादायक और सीखने का एक अविश्वसनीय अनुभव था.मैं नई पीढ़ी के एमआरआई स्कैन, मल्टीस्लाइस स्टीन और कार्डियाक सिटी स्कैन, ४डी/५डी सोनोग्राफी और कलर डॉपलर, डिजिटल एक्स-रे में प्रगति, ओपीजी और मैमोग्राफी मशीनों और सबसे महत्वपूर्ण, एआई के बारे में व्यापक ज्ञान प्राप्त करने के अवसर के लिए पूरी तरह से प्रबुद्ध और आभारी हूं. हमारे अत्याधिक उन्नत रेडियोडायग्नोस्टिक क्षेत्र के प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय संकायों द्वारा अद्भुत कार्यशालाओं और वार्ताओं के माध्यम से अन्य दिलचस्प विषयों के बीच रेडियोलॉजी के क्षेत्र में क्रांति हुई है और मुझे इस बात का हर्ष है कि समय के साथ मैं सेमिनारों, कान्फ्रेंसों के माध्यम से स्वयं को अपडेट करते हुए इसका लाभ मरीजों को दे पा रहा हूं और उनका विश्वास भी सदैव बढ़ता रहा है. सम्मानित शिक्षकों, वरिष्ठों, साथी रेडियोलॉजिस्ट और कई पुराने और नए दोस्तों के साथ यह एक सुखद और यादगार समय था. मैं चेन्नई में अगले आईआरआईए सम्मेलन का उत्सुकता से इंतजार कर रहा हूं. सभी के साथ और विश्वास के लिए आभारी रहूंगा.

जागो सनातनी

राजेंद्र मिश्र 'राज'

हिन्दुस्तान वर्षों पुराना है
सदियों से यहाँ सनातनी रह रहे हैं
लेकिन दुर्भाग्य हैकि मुठ्ठी भर लुटेरे
अलग अलग देशों से यहाँ आए
लूट - पाट की
हमारी संस्कृति को समाप्त करने
की भरकस कोशिशें भी की
हमारे मन्दिरों को तोड़ा
जबरन वहां अवैध कब्जा किया
और हम लाचारी स्विकार कर
तमाशा देखते रहे हमें लुटेरों ने
कमजोर समझा
स्थिति आज़ादी के बाद और भी
बिगड़ती गई आखिंर कब तक ये
तथाकथित खद्दर धारी
सनातन धर्म का मज़ाक उड़ाते
रहेंगे?
वह भी सिर्फ वोट बैंक के लिए
सत्ता में वापसी के लिए कांग्रेस के
चेहरे से मुखौटा उतर चुका है
दुसरे राजनीतिक दल भी
घिनौनी हरकतें करने पर आमदा है
सनातनी बिखर गए तो लुटेरे राज
करेंगे फिर देश गुलामी के जंजीरों
से जकड़ जाएगा
जागो सनातनी! जागो!!

बडनेरा का जागृत शिव मारोती मंदिर

श्रीरामलला मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा पर हुआ चार दिवसीय कार्यक्रम

बडनेरा के नई वस्ती आठवड़ी बाजार स्थिति शिव मारोती संस्थान जागृत मंदिर रहने के साथ ही यहां पर श्रीराम लला मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में चार दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया था. मंदिर को तपोभूमि भी कहा जा सकता है. मंदिर का परिसर जहां प्राकृतिक सुंदरता सेलैस है, वहीं ट्रस्टी प्रभु श्रीराम को समर्पित और भक्तीभाव वाले रहने के कारण यहां लगातार विकास काम हो रहा है.

वंदनीय बाबा भगवान बालगिर महाराज सन १९०० शुरु होने के पहले इस क्षेत्र में आये. वे मूलतः ग्राम विठापुर जि.रिवा (मध्यप्रदेश) के निवासी थे. वे वृत्ति से नागा संन्यासी बताये जाते हैं. बचपन से ही धार्मिकता की ओर झुकाव के कारण घर-द्वार छोड़कर संत बन गए और यहां उनका आगमन हुआ.वे प्रभु को समर्पित निर्लेप व निर्लोभी संत थे.

आज जहां मंदिर स्थित है, उस स्थान के पूर्व में एक झरना पानी छोटा प्रवाह सदा बहता रहता था और अगल-बगल लोगों की खेतियां थी. मंदिर के थोड़ी दूर पर श्मशान स्थित था. खेती को भरपूर पानी मिलने के साथ ही तपस्वी श्री बालगिर महाराज को लेकर भक्तों में लगातार विश्वास बढ़ता गया और वे संत के रूप में यहां सुख्यात हुए. वंदनीय श्री बालगिर महाराज ने इस स्थान पर अपनी तपस्या एवं डेरा स्थापित किया. यहां भगवान शिव की शिवलिंग थी. बाबा की तपस्या एवं भक्ति के प्रमाण से सर्वसाधारण लोग आकर्षित होने लगे और उनके दर्शन एवं सहयोग में जनसमुदाय धीरे-धीरे आगे आने लगा. इसी जनसमुदाय में एक भक्त शिवरामजी धोंडीबाजी थे, जिन्होंने बाबा की सेवा में अपनी ६ एकड़ खेत की जमीन भेंट कर दी. उनका पश्चात स्वर्गवास हो गया. लेकिन आज भी मंदिर ट्रस्ट द्वारा उन्हें अपार सम्मान देते हुए सदैव याद किया जाता है. वंदनीय बाबा अपने इस धार्मिक एंव सर्वसमावेशक अध्यात्मिक देश में जब-जब, जहां-जहां परंपरागत जनसाधारण के मार्गदर्शन एवं उनकी समस्याओं के समाधान हेतु बड़े-बड़े मेलों जैसे की कुंभ मेले का आयोजन होता था. वं. बाबाजी बस जाते और कांटों के सेज पर या आसन पर बैठे रहते थे. उनके इस असाधारण किंतु आध्यात्मिक साधनाओं के कारण भक्त प्रभावित होने लगे. इस हठयोग की साधना से प्रभावित होकर धर्मशील लोग उनको बहुत सा दान-धर्म करते थे. बाबा ने उससे निःस्वार्थ भाव से इस स्थान पर एक शिव मंदिर का निर्माण करवाया. भक्तों की संख्या धीरे- धीरे बढ़ती गई और आज यह भव्य मंदिर बडनेरा में अध्यात्म क्षेत्र की शान बनकर साल भर इसमें कोई न कोई कार्यक्रम लगातार लिया जाता है.

कालांतर में भक्तों ने आज जहां मारोती –हनुमान मंदिर स्थित है, शिव मंदिर के ठीक पीछे ३० फूट दूर है. यहां पर एक छोटे से चबूतरे पर श्री रामभक्त हनुमानजी महाराज का छोटा विग्रह अर्थात छोटी मूर्ति स्थापित की. इनका दर्शन करने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं.

स्वेच्छा से समाधि ली

वंदनीय बालगिर महाराज अष्टाचक्र थे. अर्थात उनके कुछ अंग तेढे-ताडे कमर झुकी हुअी थी. इसलिये जनसाधरण उन्हें मोडक्या का मंदिर इस नाम से संबोधित करते थे. ऐसे परोपकारी सबके कल्याण की भावना रखने वाले समाज के प्रति सद्भाव एवं साधारण नित्य आनेवाली समस्याओं का समाधान करने वाले, सबका चारित्रीकरण धार्मिक-अध्यात्मिक विकास करनेवाले महान संत ने सन १९३२ में अपनी ११० वर्ष की आयु में स्वेच्छा से समाधि ग्रहण की. जो आज भी इस शिव मारोती में अर्थात इस परिसर में स्थित है और भक्त लोग, मंदिर में भगवान के दर्शन करने हेतु आने वाले भक्त श्रध्दा भक्ति से बाबा की समाधि पर भी माथा टेकते हैं, अपनी श्रध्दा भक्ति के फूल चढ़ाते हैं.

ऐसे शिव मारोती मंदिर का विकास होता चला गया. जिस भक्त ने अर्थात श्री शिवरामजी धोंडीबाजी की ६ एकड़ जमीन कालांतर से सरकारी सड़क में उसका कुछ भाग जाने लगा. तब बडनेरा ग्राम के कुछ गणमान्य नागरिक निःस्वार्थ भाव से इकठ्ठे आये और सरकारी नियमानुसार संस्था का गठन किया. इस संस्था के नाम सरकार ने वह सडक निर्माण हेतु गयी इस जमीन का मुआएजा दिया. इस सरकारी पैसे से छोटे मारोती मंदिर को बड़ा स्वरूप प्रदान किया गया. उसका एक बड़े स्वरुप में निर्माण किया गया. शिव मंदिर के सामने एक सभागृह का निर्माण किया गया. शिव मंदिर के सामने एक सभागृह का निर्माण किया गया, बाबा की समाधि पर एक आकर्षक मंदिर का निर्माण किया गया.

कुछ समय पश्चात सरकार सड़क के अधिक विस्तार के लिये और जमीन ली, इसके मुआवजे के रूप में और अधिक राशि मिली. जिससे शिव मंदिर और मारोती के बीच मे जो ३० फुट की जगह थी, उस स्थान पर एक सभागृह का निर्माण किया गया. बालागिर महाराज के समाधि लेने पर उनके सानिध्य में बढे श्री प्रेमदास महाराज ने इस स्थान की जिम्मेदारी संभाली और अपनी भक्तिमय सेवाएं देते रहे. समयानसार इस क्षेत्र में वसाहत अर्थात जन साधरण की बस्ती बसने लगी.

बडनेरा शहर में रेलवे का आगमन हुआ. इस क्षेत्र में सन १९०० से १९०६ में एक कपड़ा मिल स्थापित हुई. इसलिये यहां की खेती की जमीन पर लोगों की बस्ती बसती चली गयी. रेलवे आगमन और बडनेरा कपड़ा मिल के कारोबार का सहयोग रेलवे से होने लगा. इस कपडा मिल के माल का आवा-गमन रेलवे से होने लगा. इसलिये बडनेरा के कुछ व्यवसायी वृत्ती के सज्जन लोगों ने अपनी बैलबंडियों द्वारा रेलवे मालधक्का पर जनता का, कपडा मिल का माल पहुंचाना शुरु किया. इस मालधक्के का ठेका उस समय एक सज्जन बाबू मुकरदम पवार किया करते थे. वे अति धार्मिक प्रवृत्ति के थे. उन्होंने अपनी सहवृत्ती से इस मंदिर के एक बैलबंडी के पिछे अनुदान जमा करना शुरु किया. और उस पैसे से फिर से मंदिर निर्माण कार्य में सहयोग दिया.

कुछ समय पश्चात तत्कालीन सांसद अनंतराव गुढे ने भी सांसद निधि से मंदिर के सभागृह में अपनी निधि लगायी और शिव मंदिर के सामने का पुराना सभागृह हटाकर यहां के ही दानशील वृत्ति के ओस्तवाल परिवार ने नया भव्य दिव्य सभागृह बनवा दिया. समय देखते हुए शिवमंदिर का भी जीर्णोधार वहां के ही एक चौधरी परिवार ने करवाया. इस कार्य में यहां के ही नदियाना परिवार ने अपनी सेवाएं दी. ऐसा यह शिव मारोती मंदिर प्रभु की कृपा से सबसे भक्तिभाव से सहज गति से व्यवस्थित तरीके से समस्त धार्मिक मर्यादा को पालन करते हुए चल रहा है और भारत-अयोध्या स्थित श्रीराम मंदिर की प्राणप्रतिष्ठा स्थित २२ जनवरी २०२४ को नियमित रूप से विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किया गया है.

भक्तिभाव, देशप्रेम के साथ ही अन्य विभिन्न कार्यक्रम किया जा रहा है. भारतीय सांस्कृतिक के मूल्यों की पुनह स्थापना एवं नवीन निर्माण हेतु संस्कारित है और सबके सहयोग से प्रभुकृपा से गतिमान है. सबको श्रीरामलला को स्थापना हेतु बधाई एवं रामजी चरणों में प्रणाम जय श्रीराम व बाबा बालगिर महाराज के समाधि स्थित होने पर प्रेमदास महाराज कामकाज संभाला और उनके पश्चात सज्जनगड निवासी श्रीधर स्वामी महाराज को शिष्य व रामदास पांडेजी महाराज का आगमन हुआ. उन्होंने अपना देह सन १९८८ में रखा. उनकी सेवा में उनके शिष्य बलिराम शिवरामजी उगले रहे और साथ में श्रावण जी एवं जंगलूजी धामले रहे.आज धार्मिक एवं जनकल्याण करे समार्पित अधिकृत न्याय द्वारा कार्यभार बड़े ही सूचास एंव धार्मिक तथा सांस्कृतिक पुनहा उद्धार हेतू समर्पित जनसमुदाय द्वारा हो रहा है.

विदर्भ स्वाभिमान के श्रीराम लला विशेषांक का विमोचन करते अरुणभाऊ पडोले, समाजसेवी चंद्रकुमार उर्फ लप्पी भैय्या जाजोदिया, विनायक सोलंकी, निलेश निमकर, ओम हातगांवकर, पोदार इंटरनॅशनल स्कुल के प्राचार्य सुधीर महाजन, डॉ. आशिष खुळे के साथ संपादक सुभाष दुबे व अन्य तथा बडनेरा के शिव मारोती मंदिर में विमोचन का नजारा

येवदा का २५० साल पुराना राम मंदिर

रघुवंशी परिवार वर्षों से कर रहा है प्रभु की सेवा

जिले में कई ऐसे भी मंदिर हैं, जिनका इतिहास काफी पुराना है. दर्यापुर तहसील के येवदा का श्रीराम मंदिर भी ऐसा ही है. इस मंदिर का इतिहास काफी पुराना है. अकोट का रघुवंशी परिवार इस मंदिर में प्रभु की सेवा करता है. मंदिर जहां जागृत है, वहीं नक्काशी और बेहतरीन कलाकारी का नमूना भी कहा जा सकता है. हजारों भक्तों की मनोकामनाओं के इस मंदिर ने पूरा किया है.

स्थानीय राम मंदिर जागृत रहने के साथ ही २५० साल का इतिहास रखता है. यह गांव में धर्म-कर्म और व्यवस्था का एक बहुत बड़ा केंद्र है. मंदिर का निर्माण अकोट निवासी रघुवंशी परिवार ने कराया था. यह मंदिर सागवान की लकड़ी का सुंदर नकाशीदार तीन मंजिला था. सूरज की पहली किरण प्रभु श्रीराम के चरणों में पड़ती थी. साथ ही चारों तरफ बड़े-बड़े बुर्ज बने हुए थे. मंदिर का निर्माण यह नदी किनारे से कुछ सौ मीटर दूर ही किया गया था. मंदिर में पहली मंजिल पर पुरुष तथा ऊपरी मंजिल पर महिलाओं के लिए व्यवस्था की गई थी. वक्त के साथ यह मंदिर की देखभाल का कार्य यह येवदा के रघुवंशी परिवार को सौंपा गया.

मंदिर का बेहतरीन संचालन हो रहा था. सन १९५७ में मंदिर में आग लगी जिसके बाद मंदिर का बहुत बड़ा हिस्सा जल गया. गर्भगृह सुरक्षित था. बाद में मंदिर की अपनी करीब ५० एकड़ जमीन है. इससे होने वाली आय से मंदिर का साल भर का कार्य तथा देखभाल की जाती है. श्री रामचंद्र संस्थान, येवदा द्वारा यह मंदिर चलाया जा रहा है. इतना ही नहीं तो रघुवंशी परिवार प्रभु की सेवा में समर्पित परिवार है. इस परिवार द्वारा प्रभु की सेवा के साथ ही सदैव धार्मिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है. सन २०१३ में मंदिर का जीर्णोद्धार कर सुंदर मंदिर का निर्माण कराया गया. साथ ही राजस्थान के जयपुर से राम लक्ष्मण सीता की सुंदर मूर्तियों को लाया गया. राम मंदिर संस्थान द्वारा विविध धर्म कार्य चलाए जाते हैं.

अंजनगांव में बंटे एक लाख ११११ लड्डू

सारडा महाविद्यालय जय श्रीराम से गूंजा

अयोध्या में सोमवार को श्रीराम लला मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर अंजनगांव सुर्जी में विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम हुआ. इसमें हजारों की संख्या में भाविक शामलि हुए. भक्तीभाव का ऐसा उफान देखा गया कि सभी ने इसका हैरत किया. पूरा क्षेत्र ही श्रीराम मय हो गया. प्राचीन राम मंदिर सावकरपुरा, जय हनुमान मंदिर द्वारका चौक, अन्नपूर्णा माता मंदिर, दुर्गा माता मंदिर, महादेव मंदिर, देवनाथ मठ पर महाआरती व दीपोत्सव हुआ. शहर के साथ ही अंजनगांव सुर्जी के ग्रामीण क्षेत्रों में भी अपार उत्साह वाली स्थिति थी. साथ ही श्रीमती राधाबाई सारडा महाविद्यालय में ११,१११ दीपों का दीपोत्सव हुआ, इस समय का नजारा मनोहारी ही नहीं तो दिल को प्रसन्न करने वाला था.

बूंदी के लड्डू प्रसाद के रूप में घर-घर बांटे गए. हर व्यक्ति में प्रभु श्रीराम के काम में हाथ बंटाने की स्पर्धा सी लगी थी. अंजनगांव सुर्जी शहर में भगवा झंडे फहराए जा रहे हैं. इसके लिए बजरंग दल, विश्व हिंदू परिषद, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व मांगल्य सभा के पदाधिकारी और कार्यकर्ता कड़ी मेहनत कर रहे थे. सभी कार्यकर्ताओं के मुताबिक प्रभु की सेवा का उन्हें सौभाग्य मिला है, ऐसे में वे स्वयं को भाग्यशाली समझ रहे हैं. २४ जनवरी को परम पूज्य आचार्य जीतेन्द्रनाथ महाराज श्रीराम तीर्थप्रसाद एवं पवित्र शरयू जल एवं श्रीराम धूलि, कलश के साथ अयोध्या से लौटे, इस समय भव्य शोभायात्रानिकाली गई. इसमें हजारों की संख्या में भक्त शामिल हुए. पूरी नगरी श्रीरामय हो गयी. दोपहर ३:३० बजे श्री बालाजी मंदिर काठीपुरा से भव्य श्रीराम आनंदोत्सव रथ यात्रा शुरू हुई और देवनाथ मठ सुर्जी में इसका समापन हुआ. हजारों की संख्या मैं भाविक इसमें सहभागी हुए.

राणा दम्पत्ती के साथ पीठाधिश्वर शक्ती महाराज एवं रामराजेश्वर माऊली कायक्रम में पूजा करते हुए.

उल्लेखनीय सेवा के लिए दंत विशेषज्ञ डॉ. सैय्यद अबरार का संभागीय आयुक्त डॉ. निधी पांडेय ने गणतंत्र दिवस पर सत्कार किया.

महाराष्ट्र शासन

कार्यालय कार्यकारी अभियंता

सार्वजनिक बांधकाम विभाग, अचलपूर

ई-मेल पत्ता : achalpur.eew.mahapwd.gov.in   दुरध्वनी/फॅक्स क्रमांक :- ०७२२३-२२०२६०

कार्यकारी अभियंता, सार्वजनिक बांधकाम विभाग, अचलपूर दूरध्वनी क्रमांक ०७२२३-२२०२६० हे राज्यपाल, महाराष्ट्र शासन ह्यांच्या वतीने खालील कामांचे ब-१ नमुन्यातील ऑफलाईन निविदा सार्वजनिक बांधकाम विभाग महाराष्ट्र शासनाकडील योग्य त्या वर्गातील नोंदणीकृत कंत्राटदाराकडुन मागवीत आहे. निविदा कागदपत्र शासनाच्या संकेतस्थळावर येथून डाऊन लोड करण्यात यावी तसेच निविदा स्विकारण्याचा तसेच निविदा स्विकारण्याचा अुवा नाकारण्याचा अधिकारी कार्यकारी अभियंता सार्वजनिक बांधकाम विभाग, अचलपुर यांनी राखून ठेवला आहे.

अ.क्र.	कामाचे नांव	अंदाजित किंमत
१	न.प. अचलपूर क्षेत्रातील वार्ड क्रं. १३, १४, १५, १६, १७ मध्ये वेगवेगळ्या ठिकाणी बेंचेस बसविणे.	८०६६१८.००
२	न.प. अचलपूर क्षेत्रातील वार्ड क्र. ७,८,९,१०,११,१२ मध्ये वेगवेगळ्या ठिकाणी बेंचेस बसविणे.	८०६६१८.००
३	मौजे लोहार लाईन ता. अचलपुर जि. अमरावती येथे हत्तीवाले राम मंदिर परिसरात सभागृह बांधकाम व सौंदर्यीकरण करणे.	८०६०४३.००
४	मौजे खरपी ता. अचलपुर जि. अमरावती येथे पंकज बाडे ते गजानन नंदाने यांचे घरापर्यंत सिमेंट कॉंक्रीट रस्ता बांधकाम करणे	४२२३९६.००
५	सा.बां.विश्रामगृह सेमाडोह ता. चिखलदरा जि. अमरावती येथे खोली क्रं.१ची दुरुस्ती करणे.	८४०८०३.००
६	सा.बां.विश्रामगृह सेमाडोह ता. चिखलदरा जि. अमरावती येथे खोली क्रं.२ची दुरुस्ती करणे.	८४७७६.००
७	मौजे ब्राम्हणवाडा थडी ता. चांदूर बाजार जि.अमरावती येथील कुबा कॉलनी, पठाणपुरा येथे खडीकरण करणे.	३६९०४३.००
१	ऑफलाईन निविदा डाऊनलोड करण्याचा कालावधी	दि.२६.०१.२०२४ @१०.०० वाजता ते ०२.०२.२०२४ @ १७.०० वाजता
२	निविदा पूर्व बैठक स्थळ, दिनांक व वेळ	निरंक
३	निविदाकारांनी ऑफलाईन निविदा तयार करण्यासाठी (तांत्रिक व आर्थिक निविदा) निविदेची हार्ड कॉपी सादर करण्याचा ठिकाण, दिनांक व वेळ	ऑफलाईन निविदा बाबतची हार्ड कॉपी (तांत्रिक लिफाफा) सीलबंद लिफाफ्यामधे दि.०५.०२.२०२४ @१०.०० वाजतापर्यंत निवीदे नुसार कार्यालयात सादर करणे बंधनकारक आहे.
४	ऑफलाईन तांत्रिक व आर्थिक निविदा उघडण्याचे ठिकाण, दिनांक व वेळ	कार्यकारी अभियंता, सार्वजनिक बांधकाम विभाग, यांचे कार्यालयात दि. ०६.०२.२०२४ @१०.०० ते @ १७.०० वाजेपर्यंत ऑफलाईन उघडण्यात येतील (शक्य झाल्यास)

खालील संकेतस्थळावर ऑफलाईन निविदाची सर्व माहिती उपलब्ध आहे.

१) http://mahapwd.gov.in

(सदर निविदे सुचनेमध्ये काही बदल होत असल्यास वरील वेबसाईटवरती कळविण्यात येईल.)

३) कार्यकारी अभियंता, सार्वजनिक बांधकाम विभाग, अचलपूर कार्यालयातील सूचना फलक क्र.३७८/निली/दि.२४.०१.२०२४

कार्यकारी अभियंता यांचे कार्यालय, सार्वजनिक बांधकाम विभाग, अचलपूर

(कृणाल रा. पिंजरकर)
कार्यकारी अभियंता
सार्वजनीक बांधकाम विभाग
अचलपूर

(जिमाका/अम./जाहि./२४०/२०२४)

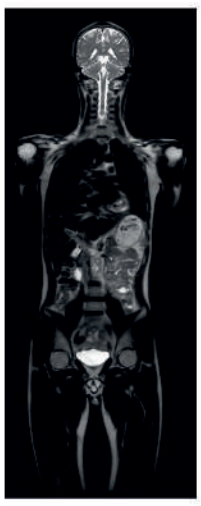

GHUNDIYAL RADIODIAGNOSTIC CENTRE

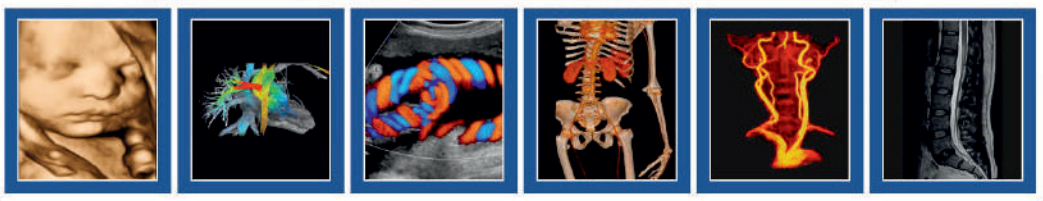

Latest Radio Imaging with Comfort, Convenience & Complete Care
State of the Art Innovation that You Can See & Experience

बेटी बचाओ save the girl child

Facilities available in Ghundiyal Radio Diagnostic Centre

- Highly-Advanced, Brand New and First of its Kind **Siemens Silent 1.5 Tesla 96 Channel MRI Scan Magnetom Sempra Imported from Germany**
- Complete MRI Examination and Quick Diagnosis in Less Than 10 Minutes
- Quick and Comfortable MRI Scan for Claustrophobic Patients
- Siemens Whole Body Multi-Slice CT Scan: Superfast, Low-Radiation Scan without Breath-Holding or Sedation
- CT/MRI Angiography and Venography Studies
- Philips Affinity 70 Highly-Advanced 5D Sonography and Colour Doppler Imported from USA
- Siemens 500 mA X-Ray Machine with Fuji's Digital Laser Radiography
- Digital Laser X-Ray Mammography, Highly-Advanced Sonomammography with Elastography & MR Mammography
- Digital Laser OPG and Cephalography
- 2D Echocardiography
- Highly-Advanced Elastography Studies
- All Kinds of Special Investigations
- Ultra-Modern Medsynaptic and Osirix Teleradiography with PACS System
- Easy and Direct Transition of Critical and Differently-Abled Patients with Special Entrance Passage for Ambulances, Wheelchairs and Stretchers
- Diploma-Holder, Highly-Qualified MRI, CT and X-Ray Technicians Residing in the Clinic Premises 24/7
- Expert Consultant Radiologists with More than 15 Years of Experience
- Immediate Reporting of all Modalities
- 24/7 Diagnosis and Reporting for Emergencies
- 160 KVA Generator Back-Up for all Modalities in Case of Power Outage

Fully-Equipped, Highly-Spacious & Completely Air-Conditioned Centre

INNOVATION 22 YEARS PRECISION TECHNOLOGY

BEST RADIO DIAGNOSIS AT YOUR SERVICE

EMERGENCY 24 HOURS SERVICES

सज्जनता की प्रतिमूर्ति हैं सुदर्शनजी

जीवन में कुछ लोगों का साथजहां हमें खुशियां देता है वही उनके आदर्श स्वभाव से बहुत कुछ सीखने का मौका मिलता है.भारतीय जैन संगठन के राष्ट्रीय पदाधिकारी सुदर्शन जी कुछ ऐसे ही व्यक्ति हैंजिनके व्यक्तित्व को शब्दों में प्रस्तुत करना किसी के लिए भी असंभव से कम नहीं है.उनका सागर में गागर जैसा व्यक्तित्व हम सभी के लिए प्रेरणादाई है.संवेदनशीलता,सकारात्मक सोच और दूरदृष्टि की छाप हर जगह पड़ती है.वे हमेशा कहते हैं कि जब हम अच्छा करते हैं तो हमारा कभी बुरा हो ही नहीं सकता.अभी तक दर्जनों पुरस्कार प्राप्त करने वाले सुदर्शनजी को हाल ही में राज्य भूषण से सम्मानित किया गया.व्यावसायिक सफलता के साथ मानवता की सेवा और संवेदनशील व्यक्ति के रूप में तीन विशेषताओं के संगम उन्हें कहना गलत नहीं होगा.

प्रदीप जैन

भारतीय जैन संगठन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, बीजेएस रत्न सहित कई दर्जन पुरस्कारों से नवाजे गए और इतने ही संगठनों के पदाधिकारी रहने वाले सुदर्शनजी गांग आत्मीयता और प्रेम के महासागर कहे जा सकते हैं. उनकी दूरदृष्टि, उनका विजन, मानव सेवा को लेकर उनकी सोच सहित अनगिनत खूबियों का उन्हें महासागर कहना गलत नहीं होगा. अपनापन तो ऐसा है कि पहली मुलाकात में ही वे सामने वाले को प्रभावित कर अपना बना लेते हैं. मानव सेवा के साथ ही अभिनंदन अर्बन को-आपरेटिव बैंक के प्रबंधन काऊंसील के अध्यक्ष के साथ ही जो भी जिम्मेदारी उन्हें दी जाती है, उसमें उनका समर्पण सभी को प्रभावित करता है. उम्र का तकाजा और उनकी सक्रियता युवाओं को भी शर्मसार करने में सक्षम है. कोरोना के बाद इन्सान खुद क्या है और प्रकृति क्या है, इसका पता चल गया है. वे हर कला में माहिर व विशेषज्ञ कहे जा सकते हैं. बैंक की अर्थसरिता किताब को उन्होंने अविस्मरणीय जहां बना दिया, वहीं दूसरी ओर मानवता, प्रेम, अपनापन, सेवाभाव, दूसरों को सम्मान देने के साथ ही आत्मीयता से दिल जीतने का मैग्नेटिक पॉवर उनमें है, इसका दर्शन सभी स्थानों पर सहजता से किया जा सकता है. सफलतम व्यवसायी, समाजसेवी, बैंकर, दिव्यांगों, गरीबों, कुष्ठरोगियों की सेवा के साथ ही मानवता के हर काम में आगे बढ़कर सहयोग करने वाले व्यक्ति हैं. अपने से छोटों को किस तरह सम्मान देना चाहिए, यह कोई उनसे सीखे. जिस तरह आम का लदा हुआ वृक्ष विनम्रता से झुक जाता है, कुछ उसी तरह का उनका व्यक्तित्व है.हरदिलअजीज, सभी को सम्मान देने के साथ ही छोटों कोप्यार और बड़ों को सम्मान देने वाले हैं. बैंक में काम करते समय उनकी दूरदृष्टि का अनुभव अक्सर आता है. अर्थसरिता को संवारने से लेकर उसे राज्यस्तर पर बेहतरीन बनाने में उनका कार्य केवल वही कर सकते हैं. लाखों मित्र परिवार उन्होंने बनाए हैं. सम्पन्नता में शालीनता, सादगी और विनम्रता की प्रतिमूर्ति सुदर्शनजी प्रेम, आत्मीयता के जहां परिचायक हैं, वहीं बोले तैसा चाले व्यक्तीत्व हैं. उन्हें जन्मदिन पर करोड़ों शुभकामनाएं.

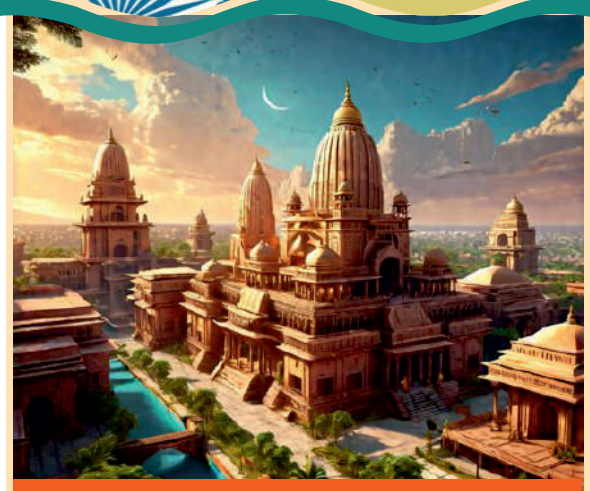

रोशनी से जगमगाया मोर्शी का श्रीराम मंदिर

श्रीराम के रंग में रंगी नगरी

मोर्शी शहर के मध्य में दो सौ साल पहले का इतिहास रखने वाले राम मंदिर २२ जनवरी को रोशनी से नहाकर भक्तों को अपार खुशी की अनुभूति दे रहा था. मंदिर में सेवा के लिए जहां सैकड़ों राम भक्त तत्पर थे, वहीं मंदिर की सजावट औररोशनाई सभी का ध्यान खींच रही थी.

कलाल समाज की महिला बहनों ने १००८ दीपों की व्यवस्था की और माहेश्वरी समाज की ओर से श्री राम लला और हनुमान चालीसा पाठन पर आधारित भजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.भक्तों का उत्साह देखते ही बनता था. मंदिर में प्रातः श्री राम प्रभु का अभिषेक एवं पूजन एवं भजन कीर्तन के पश्चात सुन्दर काण्ड का आयोजन किया गया. सायंकाल महाआरती में पूरा मंदिर भक्तों से भरा था. १००८ दीपक जलाने से रोशनी की छटा भक्तों को आकर्षित कर रही थी. शहर में पुराना राम मंदिर और यहां गजानन महाराज के शेगांव शहर से राम सीता लक्ष्मण की मूर्ति है. विठ्ठल रुक्मिणी के घर पंढरपुर से पांडुरंग और श्री कृष्ण की मूर्तियां लाई गईं और इस स्थान पर स्थापित की गईं. मंदिर का निर्माण उस समय वहां मौजूद ट्रस्ट की ओर से किया गया था. हालांकि, पूर्व नगराध्यक्ष अप्पासाहेब गेडाम और ग्रामीणों ने इसके लिए वित्तीय सहायता प्राप्त की, तत्कालीन ट्रस्ट के एड. दीपक मुले ने कहा. जय जय राम कृष्ण हरि, ऐसी मूर्तियां राम मंदिर में प्रतिष्ठित किये गये. -